VOL- X | ISSUE- V | MAY | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

समकालीन हिंदी कहानी

प्रा. डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव
हिंदी विभाग,
वसंतराव काळे महाविद्यालय,ढोकी
ता.जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

प्रास्ताविक :-

हिंदी साहित्य में समकालीन की अवधारणा सत्तर के दशक की देन है। कहानी साहित्य में समकालीनता की चर्चा होती है तो उसे आम तौर पर तत्कालीन अथवा एक ही समय का मानकर स्वीकार किया जाता है। जिसमें कुछ विचारधारा स्पष्ट है। भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात लिखी गई हिंदी कहानियों में अस्तित्ववादी विचारधारा का प्रभाव पर्याप्त दृष्टिगोचर होता है। समकालीन हिंदी कहानी में अस्तित्ववादी प्रभाव को अनेक स्तरों पर देखा जा सकता है। अस्तित्ववादी विचारधारा के बारे में अमरसिंह वधान लिखते हैं, "अस्तिववादी विचारधारा यह मानकर चलती है कि, मनुष्य के जीवन में शून्यता एकाकीपन पीड़ा वेदना व्यथा और निराशा का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, शैलेश मटियानी, सुधा अरोड़ा, रामदरश मिश्र, श्रीकांत वर्मा आदि कहानीकारों ने अपने कार्यों में शून्यता, विसंगति, एकाकीपन, वेदना, निराशा का विशेष रूप से चित्रण किया है। आधुनिक युग में परिवार व्यक्ति में व्यक्ति किस प्रकार अजनबी बन जाता है और एकाकीपन में घूँट - घूँट कर जीवनयापन करता है।"1 इस बारे में ज्ञानरंजन की कहानी 'फेंस के इधर-उधर' में दो पीडियों के अंतर और अजनबीपन की अनुभूति व्यक्त है। सुधा अरोड़ा की कहानी की नायिकाएं आपसी परिवेश में कुछ कटी हुई नजर आती है।

साहित्य की समकालीनता दो दिशाओं में कर सकता है। इस संदर्भ में हरपाल सिंह अरुष लिखते हैं, "साहित्य समकाल का अतिक्रमण दो दिशाओं में कर सकता है पीछे की ओर तथा आगे की ओर। पीछे की ओर अतिक्रमण में परंपराओं की जड़ता को उजागर करना तथा इतिहास मोह की अपेक्षा इतिहास की भूलों से पाठ लेना समाहित किया जाता है।"2 समकालीन हिंदी कहानी में कर्म एवं संघर्ष बोध की अभिव्यक्ति हुई है। रामदरश मिश्र की कहानी 'एक औरत एक जिंदगी' में मानव के कर्म और संघर्ष से चित्रित है। प्रस्तुत कहानी की नायिका भवानी न्याय के लिए पहले इधर-उधर दौड़ती हैं, लेकिन जब उसे न्याय नहीं मिलता तब अपने स्वयं के बल पर कठोर कर्म और संघर्ष की मूर्ति बनकर पाठक के सम्मुख उपस्थित होती है। समकालीन हिंदी कहानी में मानवीय विचारात्मकता तथा परिवेश से जुड़ी है। इस कहानी के विषय ज्यादातर मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग से जुड़े हैं। समकालीन कहानीकारों ने मध्यवर्गीय परिवार को मध्यवर्गीय नजरिचे से समझाने का प्रयास किया है। जिसमें भीष्म साहनी, राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय जीवन के ठोंस अनुभूतियों समकालीन समय में चल रहे सामाजिक, राजनीतिक, स्थानीय विचारधारा को आम आदमी के सवालों से जोडा है।

समकालीन हिंदी कहानी में व्यक्तित्ववादी विचारधाराएं तथा मानवीय स्वतंत्रता पर बल दिया है। उस समय का मनुष्य अपने प्रत्येक निर्णय में स्वतंत्र उत्तरदायी है। समकालीन हिंदी कहानीकार डॉ. महिपसिंह की कहानी 'कील' के पिता चोपड़ा साहब और पुत्री मोना दोनों के बीच हुई बहस दृष्टव्य है। मानव जब अपने निर्णय पर दृढ नहीं रह सकता तो यह सच है कि वह जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। समकालीन हिंदी कहानीकार अनीता अग्रवाल की कहानी 'फड़फड़ाहट' प्रस्तुत कहानी की नायिका से स्पष्ट हो जाता है कि,"स्वतंत्र निर्णय के क्रियान्वयन के पश्चात मनुष्य कितना संतुष्ट होता है। दूसरे ही क्षणों से उसे लगता है कि उसने जो कुछ किया है वह ठीक ही किया है। उसने वह कहा जो कहना चाहती थी। बिना चाहे कुछ नहीं किया है।"3 इस प्रकार की व्यक्तिवादी विचारधारा से समकालीन हिंदी कहानी सर्वश्रेष्ठ बनी है।

समकालीन हिंदी कहानियों को मार्क्सवादी, अस्तित्ववादी, मनोविश्लेषणवादी और व्यक्तित्ववादी सिद्धांतों ने प्रभावित किया है। इसी समय की हिंदी कहानी

अपनी वास्तविकता वर्ग - संघर्ष रूढिविरोध, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित है। डॉ. देवराज उपाध्याय लिखते हैं,"प्रेमचंद ने मनोविज्ञान के महत्व को पहचाना था इसलिए उन्हें कहानी के लिए मनोविज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। अपितु यह उद्घाटित भी किया की सुजान भगत, पंच परमेश्वर में किसी न किसी मनोविज्ञान रहस्य को खोलने की चेष्टा की है।"4 हिंदी के कहानीकार इलाचंद्र जोशी ने विकलांग और अतृप्त व्यक्ति को अपनी कहानी का केंद्र बनाया है। जैनेंद्र विचार वादी कहानीकार थे। इन्होंने अपनी कहानियों में मनोविश्लेषण को चित्रित किया है।

समकालीन हिंदी कहानियों में व्यवस्थावादी स्वर रेखांकित हुआ है। उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि कहीं व्यवस्थाओं में तीव्र रोष प्राप्त होता है। साथ ही साथ प्रगतिशील आंदोलन से प्रभावित स्त्रियों के मन में एक नए प्रकार की चेतना का उदय हुआ और सामाजिक, आर्थिक असमानता और पितृसत्ता के खिलाफ प्रदर्शन एवं धरणा हुए। जिनमें हिंदी की कहानीकार कृष्णा सोबती, सुधा अरोड़ा, मृणाल पांडे, मंजुल भगत आदि की कहानियों में समकालीन हिंदी कहानी द्वारा सदियों चले आए मानवीय मूल्य, महानगरीय जीवन चित्रित है। अतः समकालीन हिंदी कहानी की विविध विचाधारा, मानवीय प्रवृत्तियां एवं परंपरा स्थापित हुई है।

भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात नगरीकरण और औद्योगिककरण की प्रक्रिया तीव्रतम होती गई। आजादी के बाद बढ़ती जनसंख्या के कारण बेरोजगारी, राजनीतिक भ्रष्टाचार, नौकरशाही की लापरवाही, महंगाई, अनैतिकता आदि बातों को समय हिंदी कहानीकारों ने विषय बनाया। समकालीन हिंदी कहानी बोध एवं संवेदना के धरातल पर उस समय की प्रतिकूल जीवन स्थितियाँ, सामान्यजनों के संघर्षों का अंकन बड़ी विविधता और सुक्ष्मता के साथ किया है। जिसमें अमरकांत, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, राजकमल चौधरी, धर्मवीर भारती, मन्नू भंडारी जिनकी कहानियों में समकालीन पारिवारिक जीवन की विभिन्न समस्याओं, नर - नारियों के संबंधों के विविध आयाम को लिया गया है। मन्नू भंडारी की 'अकेली' कहानी में एक स्त्री के अकेलेपन की कथा व्यक्त हुई है। 'मजबूरी' इस कहानी के माध्यम से पीढ़ियों के अंतर को आधुनिक जीवन के यथार्थ के रूप में चित्रित किया है। 'यही सच है' कहानी में दो प्रेमियों को लेकर उपजे हुए नारी मन के द्वंद्व की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार से मन्नू भंडारी अपनी कहानियों के माध्यम से समकालीन परिवेश के विविध अनुभवों मानवीय पीड़ा, मानवीय दृष्टिकोन को खुलेपन और अकृत्रिम ढंग से अंकित करती है।

देशी - विदेशी परिवेशों में स्त्री - पुरुष के संबंधों को अपनी कहानियों का कथ्य उषा प्रियंवदा ने बनाया है। उनकी 'वापसी' कहानी आधुनिक जीवन में पारिवारिक विश्रृंखलता को लेकर चलती है। उनकी कहानियाँ शहरी जीवन की यांत्रिकता, व्यक्ति और परिवारों के जीवन में आ रहे परिवर्तनों का चित्रण करती है। उनकी कहानियों में आधुनिक नगर बोध की उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का यर्थाथ रुप में चित्रण देखने को मिलता है।

शैलेश मटियानी, मार्कण्डेय, राजकमल चौधरी, राम नारायण शुक्ल, मोहन सिंह सेंगर, ममता कालिया, राजी सेठ, मृणाल पांडे आदि कई रचनाकारों ने विभिन्न समस्याओं से मुक्त - अमुक्त रचनाएं लिखकर समकालीन हिंदी कहानी को बढ़ावा दिया है।

निष्कर्ष :-

समकालीन हिंदी कहानीकारों ने समकालीन समाज व्यवस्था की संगतियाँ - असंगतियाँ, नगरों - महानगरों का यांत्रिक जीवन, राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा, आर्थिक विषमता, महानगर के संवेदनहीन मानवीय रिश्ते टूटते जा रहे पारिवारिक संबंध आदि विषयों को चित्रित करने का प्रयास किया है। गांव, शहर,नगर, महानगर, बढ़ती बेरोजगारी, दिखावापन, अकेलेपन, अजनबीपन, तणावपूर्ण जीवन आदि को अपनी कहानियों का विषय बनाया है।

संदर्भ सूची :-

1) एक समकालीन हिंदी कहानी - अमरसिंह विधान - पृष्ठ 87
2) समकाल और सौंदर्यबोध आलेख भाषा - जन.फर. 03 केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली - हरपाल सिंह अरुष -पृष्ठ 23
3) अनीता अग्रवाल - फडफडाहट - धर्मयुग : 13 अक्टूबर 1969 पृष्ठ 68
4) आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ. देवराज उपाध्याय - पृष्ठ 203